भीलवाड़ा फोकस

RNI No. : RJHIN/25/A0890

भीलवाड़ा की बात, फोकस के साथ.....

वर्ष - 02 | विशेष अंक | बिजौलिया - शनिवार, 15 अगस्त ,2026 | मूल्य - 1 रुपया | मो.- 86967 95959 | पृष्ठ - 4 | WWW.BHILWARAFOCUS.COM

बिज़ौलियां की मिट्टी से उठी वह हुंकार, जिसने हुकूमत को झुकने पर मजबूर कर दिया

आजादी के 80वें स्वतंत्रता दिवस पर विशेष : वह क्रांतिकारी, जिसने किसानों के दर्द को आंदोलन बनाया और कलम को संघर्ष का हथियार

भीलवाड़ा फोकस @ बिजोलिया

कपिल श्याम विजय

देश की हर गली में तिरंगा है। स्कूलों में राष्ट्रगान गूंज रहा है। बच्चे हाथों में झंडा लेकर आजादी का जश्न मना रहे हैं। लाल किले से लेकर देश के छोटे से छोटे गांव तक भारत अपनी आजादी के 80वें वर्ष का उत्सव मना रहा है।

लेकिन इसी आजादी के उत्सव के बीच राजस्थान की एक ऐसी धरती है, जहां आज से करीब एक सदी पहले किसानों ने अपने हक के लिए वह आवाज उठाई थी, जिसकी गूंज देशभर तक पहुंची।

वह धरती है बिजौलियां। और उस आवाज को दिशा देने वाला नाम था विजय सिंह पथिक।

आज जब पूरा देश स्वतंत्रता सेनानियों को नमन कर रहा है, तब बिजौलियां के इस महान क्रांतिकारी को याद करना महज इतिहास को दोहराना नहीं, बल्कि उस संघर्ष को सलाम करना है, जिसने अन्याय के सामने झुकने से इनकार कर दिया था।

एक नाम बदला और पहचान इतिहास बन गई

उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर क्षेत्र में जन्मे भूप सिंह के भीतर देशभक्ति का जज्बा परिवार से ही आया। अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ क्रांतिकारी गतिविधियों से जुड़े भूप सिंह ने परिस्थितियों के बीच अपनी पहचान बदलकर विजय सिंह पथिक नाम अपनाया।

आगे चलकर यही नाम राजस्थान के किसान आंदोलन का पर्याय बन गया।

पथिक जब मेवाड़ की धरती पर पहुंचे तो उन्होंने यहां किसानों की पीड़ा को करीब से देखा। बिजौलियां ठिकाने के किसान अनेक प्रकार के करों और बेगार से परेशान थे। खेत किसान का था, मेहनत किसान की थी, लेकिन बोझ भी किसान के हिस्से में ही था।

पथिक ने इस पीड़ा को सिर्फ देखा नहीं...

उन्होंने इसे अपनी लड़ाई बना लिया।

जब किसान ने कहा–अब और नहीं

1916 के दौर में बिजौलियां किसान आंदोलन को विजय सिंह पथिक ने नई दिशा और व्यापक संगठन दिया। किसान पंचायतों के माध्यम से लोगों को जोड़ा गया। किसानों को अपने अधिकारों के लिए संगठित किया गया और अन्यायपूर्ण करों तथा बेगार के विरोध को आंदोलन का रूप दिया गया।

धीरे-धीरे यह आंदोलन केवल बिजौलियां के किसानों का आंदोलन नहीं रहा।

यह सवाल बन गया-क्या मेहनत करने वाले किसान के साथ अन्याय हो सकता है?

क्या उसकी आवाज को दबाया जा सकता है?

क्या सत्ता के सामने किसान हमेशा कमजोर रहेगा?

बिजौलियां के किसानों ने इन सवालों का जवाब अपने संघर्ष से दिया।

और यही संघर्ष आगे चलकर राजस्थान के सबसे चर्चित किसान आंदोलनों में शामिल हुआ।

बिजौलियां से उठी आवाज, देश तक पहुंची

उस दौर में आज जैसी सोशल मीडिया की दुनिया नहीं थी। न मोबाइल था, न इंटरनेट और न ही खबरों को पलक झपकते देशभर में पहुंचाने वाले डिजिटल प्लेटफॉर्म।

लेकिन पथिक के पास एक ऐसी ताकत थी, जो किसी तकनीक से कम नहीं थी कलम।

उन्होंने किसान आंदोलन की वास्तविकता को लेखन और पत्रकारिता के माध्यम से सामने रखा। उनके प्रयासों से बिजौलियां के किसानों की आवाज राजस्थान की सीमाओं से बाहर पहुंची और राष्ट्रीय स्तर पर इस संघर्ष की चर्चा होने लगी पथिक ने 'राजस्थान केसरी' और अन्य पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से जनजागरण का काम किया। उनके लिए पत्रकारिता सिर्फ खबर लिखना नहीं था।

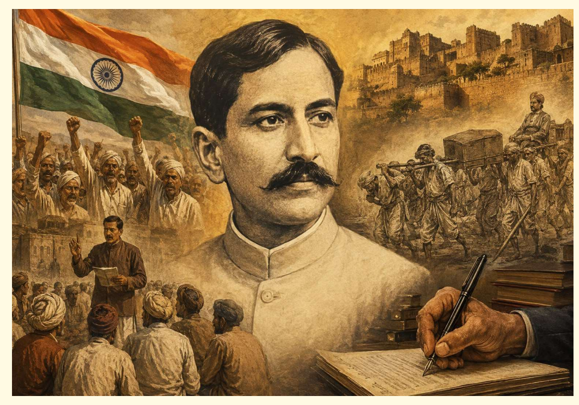

पत्रकारिता उनके लिए अन्याय के खिलाफ मोर्चा था।

आज जब पत्रकारिता को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाता है, तब पथिक का जीवन यह बताता है कि पत्रकारिता की असली ताकत सत्ता के गलियारों में नहीं, बल्कि उस आवाज के साथ खड़े होने में है जिसे दबाने की कोशिश की जा रही हो।

पथिक की सबसे बड़ी जीत क्या थी?

पथिक की सबसे बड़ी उपलब्धि केवल यह नहीं थी कि किसानों की मांगों को अंततः गंभीरता से लिया गया।

उनकी असली जीत यह थी कि उन्होंने एक बिखरे हुए किसान समाज को यह एहसास कराया कि संगठित आवाज सत्ता से बड़ी हो सकती है।

बिजौलियां का आंदोलन आने वाले किसान आंदोलनों के लिए प्रेरणा बना। इस संघर्ष ने राजस्थान में किसानों के अधिकारों की चेतना को मजबूत किया और स्वतंत्रता आंदोलन को भी नई जमीन दी।

इसलिए बिजौलियां का इतिहास केवल एक स्थानीय आंदोलन का इतिहास नहीं है।

यह उस भारत की कहानी है, जहां आम आदमी ने अपने अधिकार के लिए खड़ा होना सीखा।

आज उसी पथिक की तस्वीर धुंधली क्यों?

विडंबना देखिए...

जिस क्रांतिकारी ने बिजौलियां को देश के इतिहास में पहचान दिलाई, आज उसी बिजौलियां में उनकी स्मृति उतनी व्यापक नहीं दिखाई देती, जितनी होनी चाहिए।

पथिक के नाम पर पार्क है। संस्थाएं हैं। क्लब है। उनका नाम आज भी लिया जाता है।

लेकिन क्या केवल नाम होना पर्याप्त है?

क्या किसी महान स्वतंत्रता सेनानी की स्मृति एक छोटी प्रतिमा और औपचारिक आयोजनों तक सीमित रहनी चाहिए?

यह सवाल आज 15 अगस्त के दिन बिजौलियां के सामने खड़ा है।

पथिक पार्क में उनकी प्रतिमा के आसपास की व्यवस्थाओं और अतिक्रमण को लेकर सवाल उठते रहे हैं। ऐसे में जरूरत केवल प्रतिमा की नहीं, बल्कि उनके विचारों को जीवित रखने की है।

बिजौलियां को चाहिए पथिक की विरासत का स्थायी केंद

आजादी के 80वें वर्ष पर बिजौलियां से एक बड़ी पहल की शुरुआत हो सकती है।

यहां विजय सिंह पथिक स्मारक एवं संग्रहालय बनाया जाए। उसमें बिजौलियां किसान आंदोलन से जुड़े दस्तावेज, तस्वीरें, पुस्तकें और इतिहास उपलब्ध हो।

सार्वजनिक पुस्तकालय में पथिक के साहित्य के लिए अलग खंड बनाया जाए।

विद्यालयों में स्थानीय इतिहास के माध्यम से विद्यार्थियों को बताया जाए कि स्वतंत्रता आंदोलन केवल बड़े शहरों की कहानी नहीं था। राजस्थान के गांवों और कस्बों ने भी आजादी की लड़ाई में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

हर वर्ष 28 मई को पथिक की पुण्यतिथि पर केवल औपचारिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि किसान आंदोलन, स्वतंत्रता संग्राम और पत्रकारिता पर राष्ट्रीय स्तर की संगोष्ठी आयोजित हो।

और सबसे जरूरी पथिक को सिर्फ मूर्ति में नहीं, नई पीढ़ी की स्मृति में जिंदा रखा जाए।

आज तिरंगा पूछ रहा है...

आज बिजौलियां के आसमान में तिरंगा लहरा रहा है।

हवा में राष्ट्रगान की गूंज है।

हर तरफ आजादी का उत्साह है।

लेकिन इसी तिरंगे के नीचे अगर हम विजय सिंह पथिक जैसे सेनानियों को भूल जाएं, तो आजादी की कहानी अधूरी रह जाएगी।

क्योंकि आजादी केवल 15 अगस्त 1947 की तारीख नहीं थी। आजादी उन अनगिनत संघर्षों का परिणाम थी, जिनमें किसी ने जेल काटी, किसी ने लाठी खाई, किसी ने गोली खाई और किसी ने अपनी पूरी जिंदगी देश के नाम कर दी।

बिजौलियां के विजय सिंह पथिक ने किसानों की पीड़ा को अपनी आवाज दी।

उन्होंने संगठन को संघर्ष बनाया। उन्होंने कलम को हथियार बनाया।

और उन्होंने अन्याय के सामने झुकने से इनकार कर दिया।

आज जब देश आजादी का 80वां पर्व मना रहा है, तो

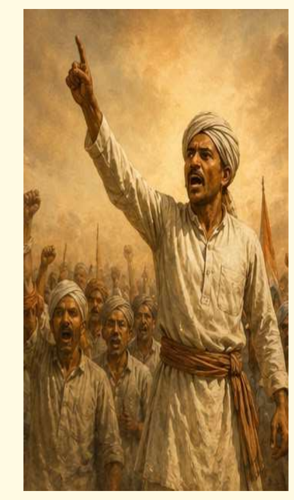

बिजौलियां के इस सपूत को याद करने का सबसे सही तरीका यही है कि हम उनकी स्मृति को केवल राष्ट्रीय पर्वों तक सीमित न रखें।

क्योंकि जिस मिट्टी ने पथिक को जन्म नहीं दिया, लेकिन जिसे पथिक ने अपने संघर्ष से इतिहास में अमर कर दिया–उस बिजौलियां को अपने इस क्रांतिकारी नायक की विरासत को अब संभालना ही होगा।

आजादी के इस पर्व पर एक संकल्प...

पथिक की प्रतिमा बड़ी हो,
उनका स्मारक बने,
उनका साहित्य उपलब्ध हो,
उनका इतिहास पाठ्यक्रम तक पहुंचे और बिजौलियां किसान आंदोलन की कहानी हर नई पीढ़ी जाने। तभी तिरंगे को हमारा सच्चा सलाम होगा।

समस्त देशवासियों को
स्वतंत्रता दिवस
की
हार्दिक शुभकामनाएं
15 अगस्त
गोपाल खंडेलवाल
विधायक , मांडलगढ़
संजय कुमार डांगी
रामलाल धाकड़

स्वतंत्रता दिवस की 80वीं वर्षगांठ पर,
सभी देशवासियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ
विजेश अहीर
बिजोलियाँ
Mob. 7073472997

समस्त देशवासियों को
गणतंत्र दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं
15 अगस्त
वन्दे मातरम्!
शुभेच्छु
मांगीलाल कराड़
माँ चावण्डा फिलिंग स्टेशन एवं माँ चावण्डा रिसोर्ट,
पार्श्वनाथ रोड बिजौलियाँ , मोबा. 98287 57737

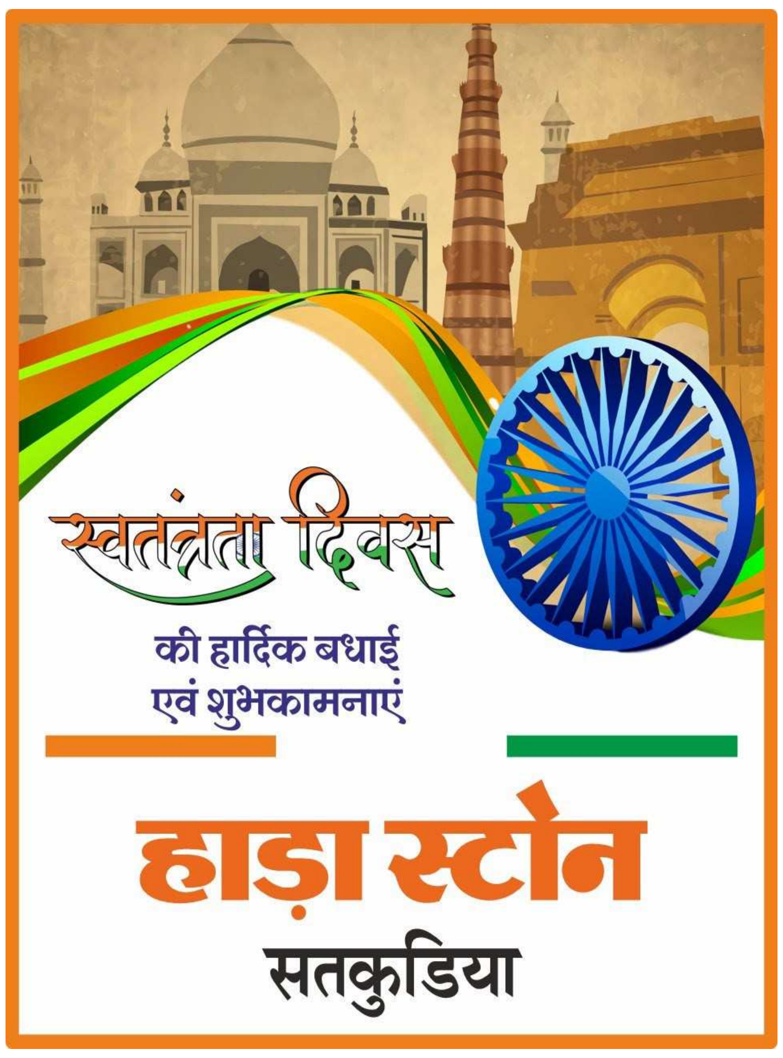
स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक बधाई
एवं शुभकामनाएं
हाड़ा स्टोन
सतकुडिया

गोपाल लाल खण्डेलवाल
विधायक माण्डलगढ़
INDIA
INDEPENDENCE
DAY
राजेन्द्र बंजारा
भाजपा मण्डल अध्यक्ष, बिजोलियां
शंकर लाल बंजारा
भाजपा कोषाध्यक्ष
स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक बधाई
एवं शुभकामनाएं
जोगणिया इंटरप्राइजेज
मांड्या रेडी, बिजोलिया

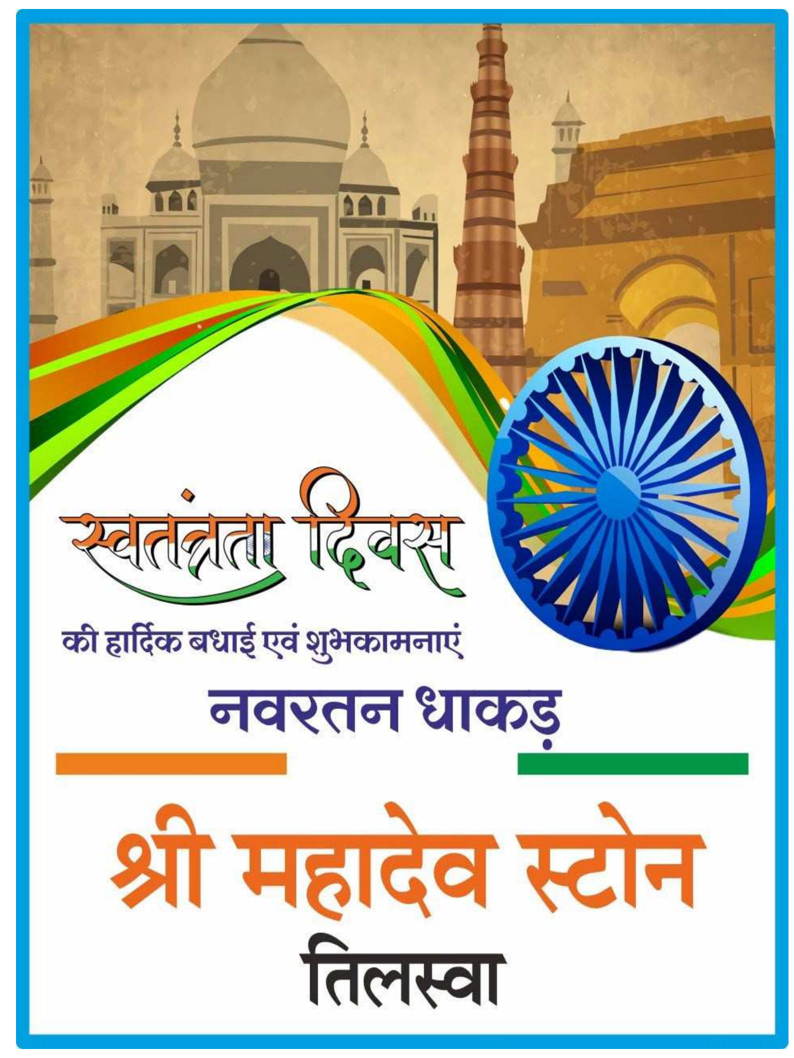
स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
नवरतन धाकड़
श्री महादेव स्टोन
तिलस्वा

स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
अनाया एन्टरप्राईजेज
खड़ीपुर

आज़ादी के जश्न के
अवसर पर आप सभी को
हार्दिक बधाई
एवं शुभकामनाएं!
गोपाल खंडेलवाल
विधायक, मांडलगढ़, भीलवाड़ा
बिट्ठल तिवाड़ी
मो.: 9783805050
जिला परिषद सदस्य प्रत्याशी, भाजपा पूर्व मंडल महामंत्री

समस्त देशवासियों को
स्वतंत्रता
दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं
15 अगस्त
आइए, मिलकर देश की एकता, अखंडता और समृद्धि के लिए समर्पित रहें।
जय हिंद! वंदे मातरम्!
गोपाल खंडेलवाल ,विधायक
विधानसभा मांडलगढ़
रामस्वरूप तेली
प्रशासक
ग्राम पंचायत मोहनपुरा।
कैलाश तेली
भाजपा युवा नेता
ग्राम पंचायत मोहनपुरा।

आज़ादी के अमृत महोत्सव पर
आप सभी को
स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक बधाई एवं
शुभकामनाएं!
अनिल कुमार खटीक
पूर्व मंडल महामंत्री भाजपा बिजौलिया
प्रदेश सचिव (प्रचार- प्रसार)
अखिल भारतीय खटीक समाज,
राजस्थान
मो. 9694513014
गोपाल खंडेलवाल
विधायक, मांडलगढ़, भीलवाड़ा
धर्मराज खटीक
पूर्व मंडल मंत्री भाजपा बिजौलिया,
प्रदेश उपाध्यक्ष अखिल भारतीय
खटीक समाज राजस्थान
मो. 9982352347

किसान आंदोलन की अलख जगाने वाली बिजोलिया का विहंगम दृश्य

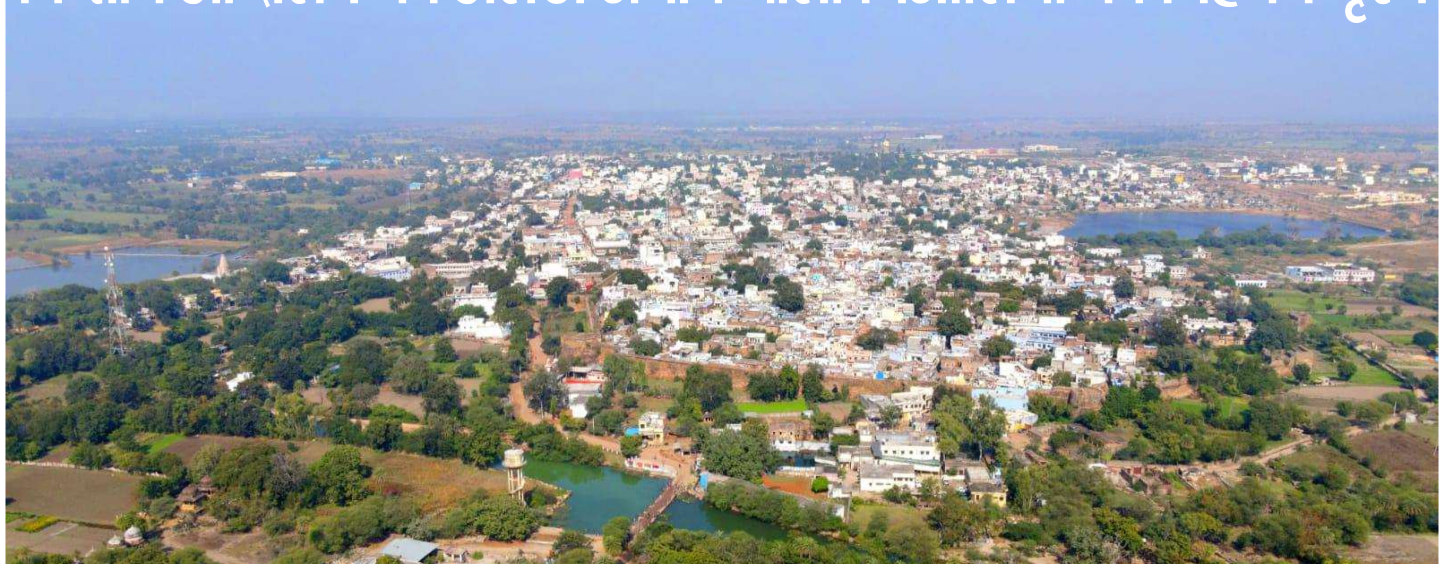

भीलवाड़ा फोकस @ बिजोलिया

खनिज सम्पदा, विशेष रूप से सेंडस्टोन (पत्थर) के लिए देशभर में प्रसिद्ध और किसान आंदोलनों के इतिहास में प्रमुख स्थान रखने वाली ऐतिहासिक नगरी बिजोलिया का यह खूबसूरत दृश्य एक ड्रोन कैमरे से लिया गया है। यह क्षेत्र प्राचीनकाल से ही राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक दृष्टिकोण से अत्यंत समृद्ध रहा है। गुहिल व चौहान वंशों के शासनकाल से लेकर स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हुए बिजोलिया किसान आंदोलन ने इस भूमि को जन-आंदोलनों का केंद्र बना दिया था। आज भी यह कस्बा अपने मंदिरों, पुरातात्विक धरोहरों, जल स्त्रोतों और सेंड स्टोन खनन उद्योग के कारण राष्ट्रीय मानचित्र पर प्रमुख पहचान रखता है। ड्रोन से लिया गया यह दृश्य न केवल इसकी भौगोलिक सुंदरता को दर्शाता है, बल्कि इसके ऐतिहासिक महत्व को भी जीवंत करता है।

बिजौलिया की धार्मिक पहचान बना 'गगन विहारी पार्श्वनाथ', जन-जन तक पहुंचा जिनशासन का संदेश

भीलवाड़ा फोकस @ बिजौलिया

शुभम जैन। भीलवाड़ा जिले का बिजौलिया प्राचीन जैन तीर्थ परंपरा के लिए देशभर में विशेष पहचान रखता है। यहां स्थित श्री दिगंबर जैन पार्श्वनाथ अतिशय तीर्थक्षेत्र और तपोदय तीर्थ भगवान पार्श्वनाथ की आराधना का प्रमुख केंद्र है। क्षेत्र को करीब 2700 वर्ष प्राचीन माना जाता है। इसी पावन भूमि से जुड़ा 'गगन विहारी पार्श्वनाथ भगवान' धार्मिक आस्था का विशेष आकर्षण बना हुआ है। तपोदय तीर्थ में विराजमान भगवान पार्श्वनाथ की विशाल प्रतिमा करीब 23 फीट ऊंची और 226 कमलों से सुशोभित है। इसी प्रतिमा की करीब 13 फीट ऊंची प्रतिकृति तैयार कर धार्मिक विहार यात्रा निकाली गई, जिससे विभिन्न स्थानों के श्रद्धालुओं को दर्शन का अवसर मिला।

गगन विहारी पार्श्वनाथ की यात्रा को मुनि पुंगव 108 श्री सुधासागर जी महाराज के सान्निध्य से विशेष पहचान मिली। यात्रा के दौरान विभिन्न स्थानों पर श्रद्धालुओं ने भगवान की अगवानी की। शांतिधारा, अभिषेक, धर्मसभा, जिज्ञासा समाधान और आरती सहित अनेक धार्मिक आयोजन हुए।

बिजौलिया पार्श्वनाथ तीर्थ का इतिहास प्राचीन जैन परंपराओं से जुड़ा है। यहां शिलालेख और पुरातात्विक अवशेष भी इसकी ऐतिहासिक महत्ता को दर्शाते हैं। यहां प्राप्त शिलालेखों को विक्रम संवत 1226 यानी करीब 1170 ईस्वी का माना जाता है।

'गगन विहारी पार्श्वनाथ' की विशेषता यह है कि भगवान की प्रतिकृति का विभिन्न स्थानों पर विहार कराकर श्रद्धालुओं तक दर्शन और जिनशासन का संदेश पहुंचाया गया। इससे बिजौलिया की धार्मिक पहचान को और व्यापक स्वरूप मिला। आस्था और विरासत का संगम बिजौलिया का गगन विहारी पार्श्वनाथ केवल धार्मिक यात्रा नहीं, बल्कि प्राचीन तीर्थ परंपरा, संतों के विहार और जन-जन तक धर्म संदेश पहुंचाने की अनूठी पहल के रूप में पहचान बना चुका है। यह बिजौलिया की धार्मिक और ऐतिहासिक विरासत को नई पीढ़ी तक पहुंचाने वाली महत्वपूर्ण परंपरा है।

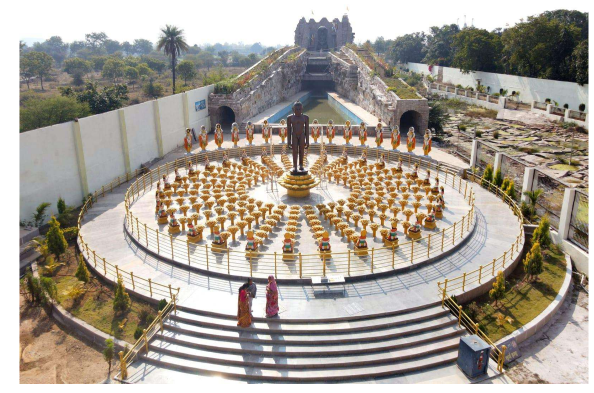

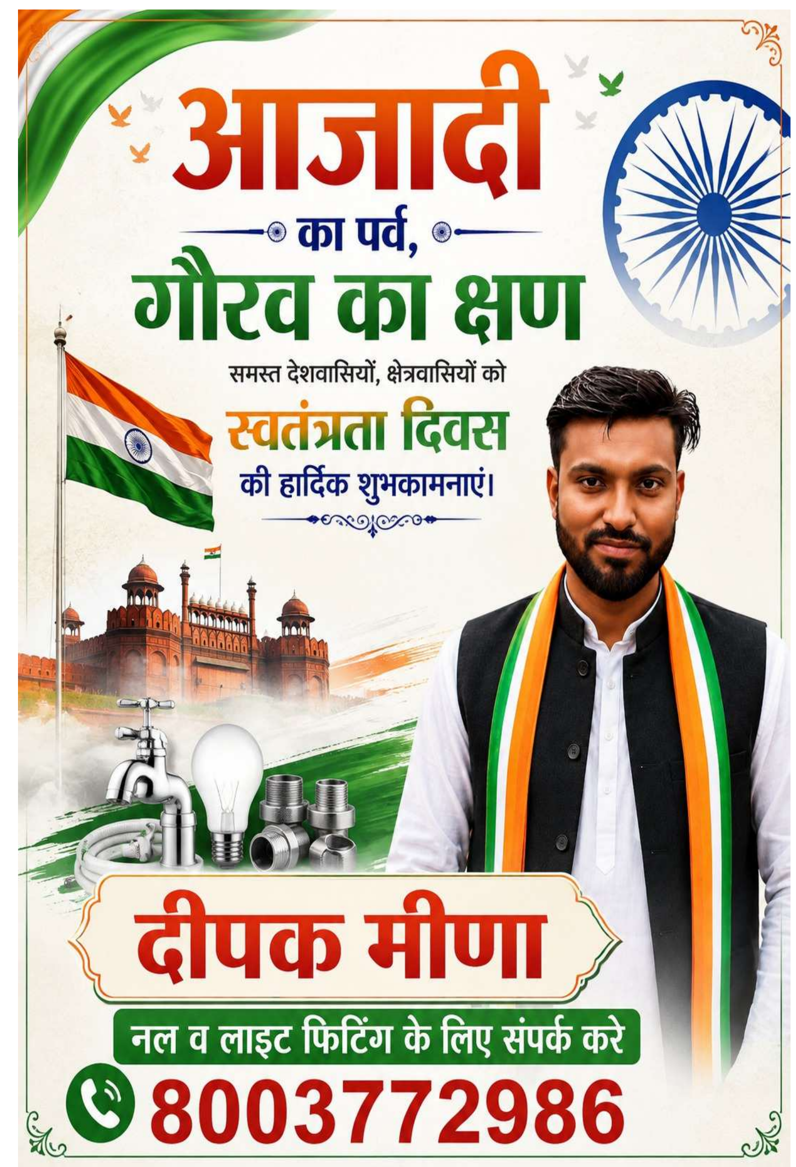

स्वत्वाधिकारी एवं प्रकाशक कपिल विजयवर्गीय के लिए मुद्रक वेदान्त प्रभाकर मेधा कप्यूटर्स एण्ड ऑफसेट प्रिन्टर्स नंदभवन, बड़े पार्क के पास, कांवाखेड़ा भीलवाड़ा (राज.)से मुद्रित व मकान न. - 1 ए - धानमंडी योजना, कोर्ट केसामने बिजौलिया , भीलवाड़ा (राज.) से प्रकाशित। संपादक - श्याम सुन्दर विजयवर्गीय । मो. 8696795959, RNI No. : RJHIN/25/A0890 किसी भी प्रकार के वाद विवाद का न्याय क्षेत्र बिजौलिया जिला - भीलवाड़ा ही रहेगा।